SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

अंक-32 वर्ष-2025

कावेरी

कावेरी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

कर्नाटक, बेंगलूरु-560 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

उद्देश्य

पत्रिका का मूल उद्देश्य है राजभाषा को बढ़ाना साथ ही हिंदी प्रयोग संबंधी आशंकाओं का निवारण एवं कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करना।

पत्रिका में प्रस्तुत विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं।

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।
मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।
शब्दों में अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

प्रकाशन
कावेरी हिंदी गृह पत्रिका

प्रकाशक
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

अंक-32

उद्देश्य
राजभाषा का संवर्धन एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका डिज़ाइन:
मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

मुख्य संरक्षक
राजीव कुमार सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संरक्षक
के. विघ्नेश्वरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक
उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सह संपादक
डॉ अनुराधा जोशी
वरिष्ठ अनुवादक

दीपा शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

प्रीति
कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्रम सं॰	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	6
2.	संदेश: महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)	8
3.	संदेश: वरिष्ठ उप महालेखाकर (प्रशासन)	9
4.	संपादक की कलम से	10
5.	आपके पत्र	11
6.	फ़ोनेटिक टाइपिंग: हिंदी टाइपिंग सीखने का सरल और आधुनिक तरीका - सुश्री प्रीति	13
7.	समय-जीवन का अदृश्य शासक - मनीषा विश्वकर्मा	15
8.	रिश्तों की केमिस्ट्री - उदय प्रताप सिंह	17
9.	भारतीय संगीत वाद्य यंत्र - शिवाप्रिया बी.	21
10.	बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान - हिमांशु पटेल	23
11.	राष्ट्र - निर्माण में शिक्षा का महत्व- वेदानंद पाण्डेय	25
12.	कौन सही, कौन गलत - दलीप सिंह	26
13.	उम्मीद की एक किरण - विजय सिंह धीरावत	28
14.	प्रसव के बाद जीवन - सत्य या भ्रम - दलीप सिंह	31
15.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम	33
16.	कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश	36
17.	लेखा एवं लेखापरीक्षा संबंधी शब्दावली	37
18.	कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने हेतु उपयोगी लिंक सूची	38
19.	पिता - डॉ अनुराधा जोशी	39
20.	कौन है तू? - शिवांकू चतुर्वेदी	40
21.	मैं-बच्चों से दूर एक माँ - प्रीति	41
22.	अक्तूबर 2025 से सितंबर 2026 के दौरान सेवानिवृत्त होने वाले पदाधिकारियों की सूची	43
23.	छायाचित्र - हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ	45
24.	छायाचित्र - हिंदी पखवाड़ा 2025 समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण	47
25.	छायाचित्र - नराकास के तत्वावधान में आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता	49
26.	छायाचित्र - ऑडिट सप्ताह 2025	50
27.	छायाचित्र - अखिल भारतीय सेवा टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2025-26	53
28.	छायाचित्र - कार्यालय में आयोजित हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी	54
29.	देखो हँस न देना	56

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

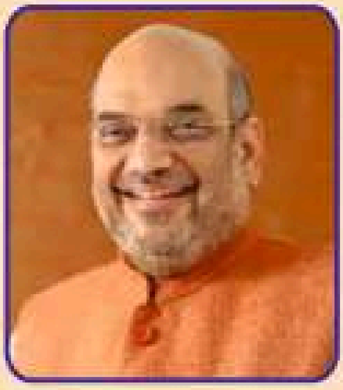

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 32वें अंक का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों में रचनात्मकता एवं सृजनशीलता को दर्शाती हैं।

हिंदी लेखन के प्रति कार्मिकों में उत्साह और रुचि सृजित करने हेतु पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। यह कार्यालय भले ही 'ग' क्षेत्र में स्थित है, लेकिन मुझे प्रसन्नता है कि इस कार्यालय के पदाधिकारियों ने इस पत्रिका में बढ़-चढ़कर योगदान दिया है। यह हिंदी के प्रति स्नेह व उत्साह को दर्शाता है। राजभाषा का प्रयोग हमारा संवैधानिक दायित्व ही नहीं अपितु अभिव्यक्ति का माध्यम भी है तथा इसी अभिव्यक्ति को रचनाकारों के प्रयास से एक मूर्त रूप मिला है।

आशा है कि यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणाप्रद एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा तथा भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन निरंतर होता रहेगा। पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन में योगदान देने के लिए संपादक मंडल, सभी सहयोगियों एवं पत्रिका के सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

राजीव कुमार सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि राजभाषा हिंदी पर केंद्रित हमारे कार्यालय की कार्यालयीन गृह पत्रिका “कावेरी” के 32वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी, सुसंगत एवं गुणवत्तापूर्ण प्रयोग की दिशा में किए जा रहे सतत प्रयासों को भी प्रतिबिंबित करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “कावेरी” का यह अंक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने दैनंदिन कार्य-व्यवहार में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु प्रेरित करेगा तथा उनकी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए एक सुदृढ़ मंच सिद्ध होगा। इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं संपादक मंडल तथा सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आने वाले समय में भी गुणवत्ता, ज्ञानवर्धन एवं लोकप्रियता के नए आयाम स्थापित करती रहेगी।

के. विघ्नेश्वरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक की कलम से...

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 32वें अंक को आप सभी को समर्पित करते हुए अपार खुशी हो रही है। हिंदी हमारी राजभाषा है और हिंदी में कार्यालयी काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व और कर्तव्य है। विगत कई वर्षों से कावेरी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के प्रति उनके लगाव को बखूबी दर्शाता है। अधिकारियों और कर्मचारियों के हिंदी के प्रति इसी प्रेम और स्नेह ने ही वार्षिक प्रकाशित होने वाली कावेरी पत्रिका को अर्धवार्षिक पत्रिका बनाया है। अब यह पत्रिका अर्धवार्षिक अंक के रूप में प्रकाशित हो रही है। 'ग' क्षेत्र में स्थित संघ सरकार के कार्यालयों में हिंदी पत्रिका का अर्धवार्षिक अंक के रूप में प्रकाशित होना अपने आप में एक उपलब्धि है।

पूरी दुनिया में हिंदी का सम्मान बढ़ा है और ये हर भारतवासी के लिए गर्व की बात है। हिंदी का सम्मान जैसे-जैसे अंतर्राष्ट्रीय जगत में बढ़ रहा है उसका असर राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता में आ रहे बदलाव में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। पत्रिका का संपादक होने के नाते पिछले कुछ समय से मैंने कार्यालय के पदाधिकारियों में हिंदी लेखन के प्रति एक रुझान और उत्साह को महसूस किया है जो सच में एक सुखद अनुभूति है। प्रस्तुत अंक में प्रकाशित रचनाओं की यदि बात की जाए तो वास्तव में इस अंक में कई स्तरीय रचनाएँ शामिल हैं जो ज्ञानवर्धक होने के साथ साथ संग्रहणीय भी हैं।

मेरा सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से कावेरी पत्रिका के माध्यम से एक बार पुनः अनुरोध है कि राजभाषा हिंदी का हृदय से सम्मान करें और उसे अपनाएं। हिंदी में काम करें और अपने अनुभाग के पदाधिकारियों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करें। हिंदी में काम करने से ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलेगा जिसकी वह हकदार है। 'कावेरी' पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करने वाले पदाधिकारियों का आभार। पाठकों की प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा। सभी रचनाकारों एवं सुधी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ !

उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

हि.प./रा.भा./2022-23/पत्रिकापावती/90 I/1214796/2025

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या-रा.भा.अनु./हि.प./90/पत्रिका-पावती/2025-26/197 दिनांक 01-12-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कर्नाटक,
बेंगलुरु-560 001

विषय: हिंदी पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक (राजभाषा विशेषांक) की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद।

पत्रिका का मुख और आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर और आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ विशेषकर श्री उदय प्रताप सिंह द्वारा लिखित "राजभाषा हिन्दी का कार्यालयीन स्वरूप", श्री वेदानंद पांडेय की रचना "हिन्दी-विविधता में एकता और विकास की शक्ति", श्री कृष्ण मोहन की लेख "शतरंज का खेल", श्री शिवांक चतुर्वेदी द्वारा लिखित कविता "घर और मकान", श्रीमती सविता की लेख "मेरी माँ" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 01-12-2025
सहायक निदेशक (रा.भा.)

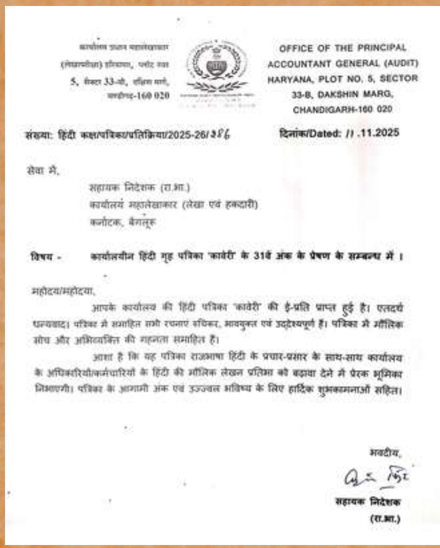

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/386 दिनांक/Dated: 11.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय - कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की महत्ता समाहित है।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(रा.भा.)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
BRANCH: FINANCE AND COMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
BASAVA BHAVAN, BASAVA CIRCLE, BENGALURU 560001

दिनांक: 03.12.2025

सेवा में
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कर्नाटक,
बेंगलुरु- 560001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

[illegible]

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 03-12-2025
15:06:59

महालेखाकार (ले व ह), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 26-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (ले व ह), कर्नाटक,
बेंगलूरु - 560001

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 17.10.2025

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री दुष्यंत सिंह की कहानी "वटवृक्ष की पाठशाला", श्री विजय सिंह चौहान की कविता "एक सरकारी कर्मी की डिजिटल दुनिया", श्री शिवांकु चतुर्वेदी की कविता "घर और मकान" और श्री चंदन कुमार चौधरी की कविता "एक प्रहर वेतन का भी" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका 'कावेरी' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 26-11-2025
16:18:29
सहायक निदेशक (राजभाषा)

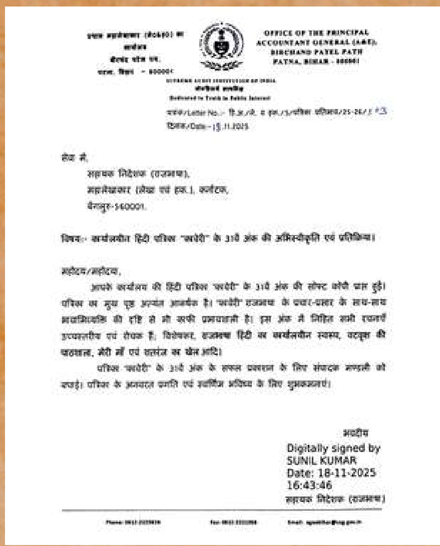

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIRCHAND PATEL PATH PATNA, BIHAR - 800001

पत्रांक/Letter No.- हि.अ./ले. व हक./3/पत्रिका प्रतिक्रिया/25-26/83
दिनांक/Date - 18.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
महालेखाकार (लेखा एवं हक.), कर्नाटक,
बैंगलुरु-560001.

विषय:- कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। "कावेरी" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी काफी प्रभावशाली है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं रोचक हैं; विशेषकर, राजभाषा हिंदी का कार्यालयीन स्वरूप, वटवृक्ष की पाठशाला, मेरी माँ एवं शतरंज का खेल आदि।

पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डली को बधाई। पत्रिका के अनवरत प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 18-11-2025
16:43:46
सहायक निदेशक (राजभाषा)

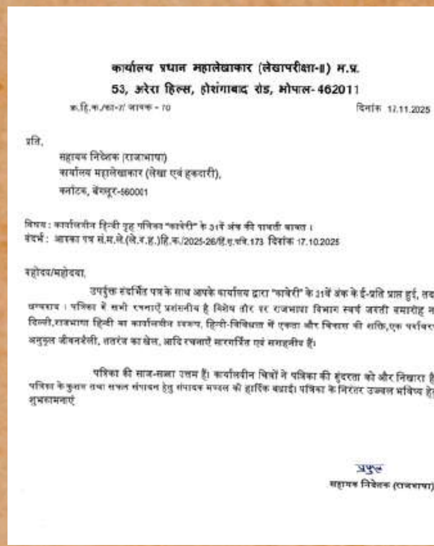

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./का-7/ आवक - 70 दिनांक 17.11.2025

प्रति,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
कर्नाटक, बेंगलूर-560001

विषय : कार्यालयीन हिन्दी गृह पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आपका पत्र सं.म.ले.(ले.व.ह.)हि.क./2025-26/हि.गृ.पत्रि.173 दिनांक 17.10.2025

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "कावेरी" के 31वें अंक के ई-प्रति प्राप्त हुई, तद धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह न दिल्ली, राजभाषा हिन्दी का कार्यालयीन स्वरूप, हिन्दी-विविधता में एकता और विकास की शक्ति, एक पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली, शतरंज का खेल, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

प्रफुल्ल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

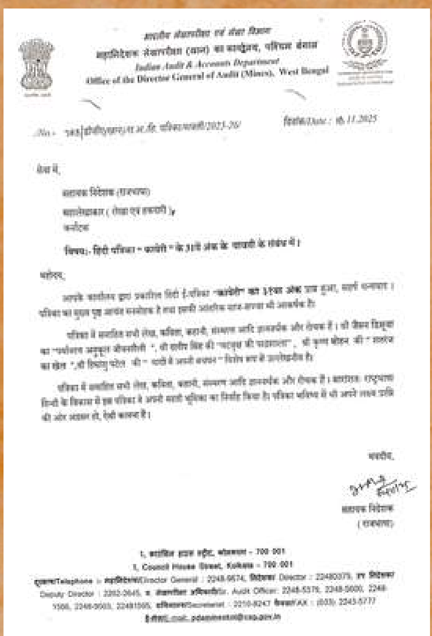

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) का कार्यालय, पश्चिम बंगाल
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Director General of Audit (Mines), West Bengal

दिनांक/Date : 18.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
कर्नाटक

विषय:- हिंदी पत्रिका " कावेरी " के 31वें अंक के पावती के संबंध में।

महोदय,

[illegible]

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
1, Council House Street, Kolkata - 700 001

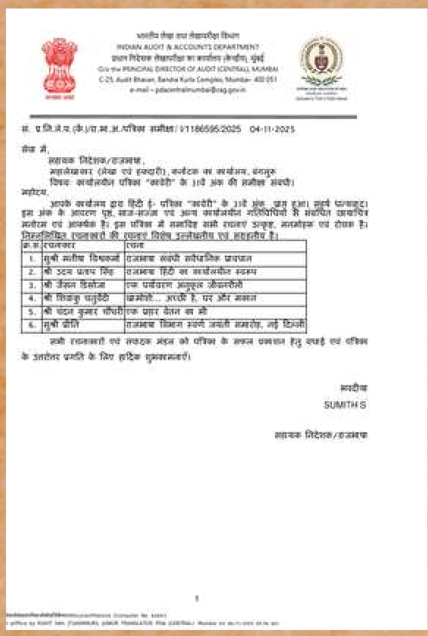

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051

सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/ I/1186596/2025 04-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कर्नाटक का कार्यालय, बेंगलूरु
विषय: कार्यालयीन पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की समीक्षा संबंधी।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी ई- पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र.सं.	रचनाकार	रचना
1.	सुश्री [illegible]	राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान
2.	श्री उदय प्रताप सिंह	राजभाषा हिंदी का कार्यालयीन स्वरूप
3.	श्री [illegible]	एक पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली
4.	श्री शिवांकु चतुर्वेदी	[illegible]... अरसी है, घर और मकान
5.	श्री चंदन कुमार चौधरी	एक प्रहर वेतन का भी
6.	सुश्री [illegible]	राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह, नई दिल्ली

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

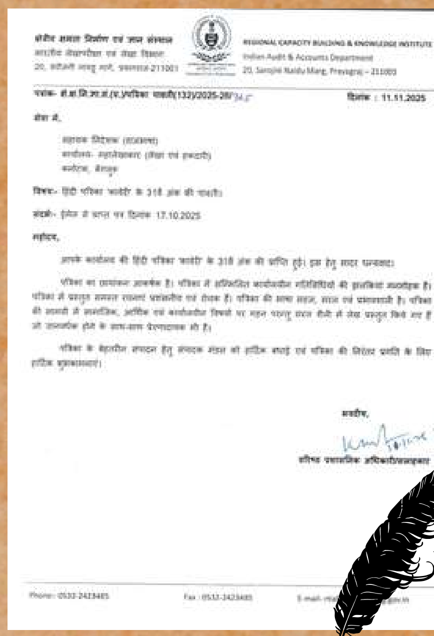

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

दिनांक : 11.11.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय:- हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 17.10.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

[illegible]

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/प्रशासन

Phone: 0532-2423485 Fax : 0532-2423485

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) उत्तराखंड, ऑडिट भवन, कौलागढ़, देहरादून-248195

Office of the Accountant General (A&E) Uttarakhand, Audit Bhavan, Kaulagarh, Dehradun-248195

पत्र सं 26.रा.भा.अनु./विभागीय पत्रिकाएँ/2025-26/1202710/2025 दिनांक17-11-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
बेंगलुरु, कर्नाटक-560001

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "कावेरी" का 31वां अंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद
पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सुंदर, सरल एवं पठनीय हैं एवं सभी रचनाकारों के साहित्यिक कौशल एवं हिन्दी भाषा से घनिष्ठता का प्रतीक है।
पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

Digitally signed by Poonam Sharma
Date: 17-11-2025 16:50:28

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/1196179/2025 दिनांक:11-11-2025

सेवा में

सहायक निदेशक(राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कर्नाटक
बेंगलूरु-560001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। सुश्री प्रीति की "राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह, नई दिल्ली", श्री उदय प्रताप सिंह की "राजभाषा हिंदी का कार्यालयीन स्वरूप", श्री दलीप सिंह की "वटवृक्ष की पाठशाला" एवं श्री शिवांकु चतुर्वेदी की "घर और मकान" आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/ 386 **दिनांक/Dated:** 11 **.11.2025**

सेवा में,

सहायक निदेशक (रा.भा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय - कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(रा.भा.)

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 001
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 001

दिनांक- 11.11.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय
पो.बा. नं. 5329/5369, पार्क हाउस रोड
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560001

विषय: आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की ई-प्रति

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। ...

... पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

स.नि.(रा.भा.)/पि.क./2025-26/88
26/11/25

26/11/25

Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652002/2653013, Fax: 0177-2657741

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II), WEST BENGAL, KOLKATA

संख्या- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/79 29 OCT 2025 दिनांक- 29/10/2025

No. - H.C/P.P/

सेवा में,

सहायक निदेशक/राजभाषा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलुरु- 560001

To:

The Assistant Director/O.L
Office of the Accountant General (A&E)
Karnataka, Bengaluru- 560001

विषय: कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 31 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'कावेरी' के 31 वें अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। ... वटवृक्ष की पाठशाला, ... घर और मकान, एक प्रहार देश का भी, ... अपनी भाषा में अपना बयान आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

19.10.25

सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

ET 222 377386

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सालई, तेनांपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018

IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफोन सं Phone No.: 044-24324500, फैक्स सं Fax No.: 044-24329562

सेवा में सहायक निदेशक (राजभाषा) कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कर्नाटक, पार्क हाउस रोड बेंगलुरु-560001	To The Assistant Director (O.L.) O/o The Accountant General (A&E), Karnataka Park House Road Bangalore-560001

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र - कावेरी

महोदय/महोदया,

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बेंगलूरु, कर्नाटक, द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 31वें अंक की ई-प्रति ... प्राप्त हुई है। ...

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

24 DEC 2025

स.नि.(रा.भा.)/पि.क./2025-26/133
26/12/25

26/12/25

फ़ोनेटिक टाइपिंग : हिंदी टाइपिंग सीखने का सरल और आधुनिक तरीका

प्रीति
कनिष्ठ अनुवादक

डिजिटल युग में हिंदी टाइपिंग का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सरकारी कार्यालयों, प्रतियोगी परीक्षाओं, मीडिया, शिक्षा तथा ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी यूनिकोड टाइपिंग अनिवार्य हो चुकी है। ऐसे में फ़ोनेटिक टाइपिंग हिंदी टाइपिंग सीखने का सबसे आसान, तेज़ और लोकप्रिय माध्यम बनकर उभरी है।

फ़ोनेटिक टाइपिंग क्या है?

फ़ोनेटिक टाइपिंग वह प्रणाली है जिसमें हम अंग्रेज़ी अक्षरों के माध्यम से हिंदी शब्दों को उसी प्रकार टाइप करते हैं, जैसे वे बोले जाते हैं। उदाहरण के लिए:

namaste → नमस्ते
bharat → भारत
shiksha → शिक्षा

इस विधि में किसी विशेष कीबोर्ड लेआउट को याद रखने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे नए सीखने वालों के लिए यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

फ़ोनेटिक टाइपिंग यूनिकोड तकनीक पर आधारित होती है। इसमें उपयोगकर्ता अंग्रेज़ी अक्षरों में ध्वन्यात्मक रूप से शब्द टाइप करता है और सॉफ़्टवेयर या टूल उसे स्वतः हिंदी में बदल देता है।

प्रमुख फ़ोनेटिक टाइपिंग टूल हैं:

- Google Input Tools
- Microsoft Indic Input Tool
- Inbuilt Phonetic keyboard

फ़ोनेटिक टाइपिंग सिखाते समय सबसे पहले स्वर (a, aa, i, ee, u, oo, e, ai, o, au,), फिर व्यंजन (k, kh, g, ch, j, t, d, n आदि) और उसके बाद मात्राओं का अभ्यास कराया जाता है।

उदाहरण:

ka→क	koo→कू
kaa→का	ke→के
ki→कि	kai→कै
kee→की	ko→को
ku→कु	kau→कौ

इससे शिक्षार्थी में अक्षर संरचना की स्पष्ट समझ बनती है।

हिंदी में कई संयुक्त अक्षर होते हैं, जैसे:

ksha → क्ष
tra → त्र
gya → ज्ञ
shra → श्र

इसके अतिरिक्त हलंत (halant), अनुस्वार (an, am) और नुक्ता (qa, za) का प्रयोग भी फ़ोनेटिक टाइपिंग का महत्वपूर्ण भाग है।

फ़ोनेटिक टाइपिंग सीखते समय प्रायः निम्न त्रुटियाँ होती हैं:

- मात्रा की गलतियाँ
- लंबे-छोटे स्वरों में भ्रम
- संयुक्त अक्षरों का गलत प्रयोग
- अंग्रेज़ी व हिंदी मिश्रित टाइपिंग

इन त्रुटियों को नियमित अभ्यास और उदाहरणों के माध्यम से आसानी से सुधारा जा सकता है।

फ़ोनेटिक टाइपिंग के लाभ:

- सीखना आसान और समय की बचत
- किसी भी सामान्य कीबोर्ड पर संभव
- सरकारी परीक्षाओं में उपयोगी
- गति और शुद्धता दोनों में सुधार
- नए और पुराने दोनों उपयोगकर्ताओं के लिए उपयुक्त

फ़ोनेटिक टाइपिंग हिंदी यूनिकोड टाइपिंग सीखने का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है। थोड़े से अभ्यास और सही मार्गदर्शन से कोई भी व्यक्ति कम समय में शुद्ध और तेज़ हिंदी टाइपिंग सीख सकता है। आज के डिजिटल भारत में फ़ोनेटिक टाइपिंग न केवल एक कौशल है, बल्कि एक आवश्यक योग्यता भी बन चुकी है।

समय-जीवन का अदृश्य शासक

मनीषा विश्वकर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

समय मानव जीवन का सबसे मूल्यवान, सबसे रहस्यमय और सबसे शक्तिशाली तत्व है। यह न दिखाई देता है, न छुआ जा सकता है, फिर भी इसके प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं रह सकता। समय न तो किसी के लिए रुकता है और न ही किसी का इंतज़ार करता है। जो व्यक्ति समय को समझ लेता है, उसका सदुपयोग करता है, वही जीवन में प्रगति करता है; और जो इसे व्यर्थ गंवाता है, वह अवसरों को खो देता है। इसीलिए कहा गया है—"समय ही जीवन है।"

समय का महत्व मानव सभ्यता की शुरुआत से ही स्वीकार किया गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में समय को 'काल' कहा गया है, जिसे ईश्वर के समान शक्तिशाली माना गया। महाभारत में श्रीकृष्ण कहते हैं—"कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः" अर्थात मैं ही काल हूँ, जो सबका नाश करता है। यह कथन समय की उस निरपेक्ष शक्ति को दर्शाता है, जिसके आगे राजा, रंक, विद्वान, मूर्ख—सभी समान हैं।

बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। समय की सबसे बड़ी विशेषता इसकी निरंतरता है। यह बिना थके, बिना रुके आगे बढ़ता रहता है। इसलिए समय का एक-एक क्षण अत्यंत मूल्यवान होता है। विद्यार्थी जीवन में समय का सही उपयोग भविष्य की नींव रखता है। जो छात्र समय पर अध्ययन करता है, अनुशासन में रहता है, वही आगे चलकर सफल होता है। इसके विपरीत, जो टालमटोल करता है, "कल कर लेंगे" की आदत डाल लेता है, वह अक्सर पछतावे के अलावा कुछ नहीं पाता।

समय केवल व्यक्तिगत जीवन ही नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इतिहास साक्षी है कि जिन सभ्यताओं ने समय के साथ स्वयं को बदला, प्रगति की, वे आगे बढ़ीं; और जो परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर पाईं, वे धीरे-धीरे समाप्त हो गईं। विज्ञान और तकनीक का विकास भी समय की सही समझ का परिणाम है। आज का युग तेज़ी का युग है, जहाँ समय की कीमत पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। एक क्षण की देरी भी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

समय प्रबंधन (टाइम मैनेजमेंट) आज की सबसे आवश्यक जीवन-कौशलों में से एक है। इसका अर्थ है—अपने कार्यों की प्राथमिकता तय करना, अनावश्यक कार्यों से बचना और ऊर्जा को सही दिशा में लगाना। समय का सदुपयोग केवल अधिक काम करने से नहीं होता, बल्कि सही काम को सही समय पर करने से होता है। जो व्यक्ति अपने समय की योजना बनाता है, वह तनाव से भी दूर रहता है और संतुलित जीवन जीता है।

प्रकृति स्वयं समय की सबसे बड़ी शिक्षक है। सूर्योदय और सूर्यास्त, ऋतुओं का परिवर्तन, दिन और रात का क्रम—सब कुछ समयबद्ध है। समय हमें अनुशासन सिखाता है। यदि प्रकृति में यह अनुशासन न होता, तो जीवन की कल्पना भी संभव नहीं थी। मनुष्य भी जब अपने जीवन में समयबद्धता अपनाता है, तो उसकी कार्यक्षमता और विश्वसनीयता दोनों बढ़ती हैं।

समय का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह सबको समान अवसर देता है। हर व्यक्ति को दिन में चौबीस घंटे ही मिलते हैं—चाहे वह अमीर हो या गरीब, शक्तिशाली हो या कमजोर। अंतर केवल इतना है कि कोई इन घंटों का सही उपयोग करता है और कोई नहीं। सफल और असफल लोगों के बीच यही सबसे बड़ा अंतर होता है।

हालाँकि समय कठोर भी हो सकता है। यह घाव देता है, अपनों को छीन लेता है, परिस्थितियाँ बदल देता है। लेकिन यही समय घाव भरता भी है, नए अवसर भी देता है। इसलिए समय को न तो पूरी तरह मित्र कहा जा सकता है और न ही शत्रु। यह हमारे व्यवहार और निर्णयों पर निर्भर करता है कि समय हमारे पक्ष में होगा या विरोध में। आज के डिजिटल युग में समय का दुरुपयोग करना और भी आसान हो गया है। सोशल मीडिया, मोबाइल फोन और मनोरंजन के साधनों ने हमारा बहुत सा समय चुपचाप छीन लिया है। यदि हम सचेत न रहें, तो हम यह भी नहीं समझ पाते कि समय कब हाथ से निकल गया। इसलिए आत्मनिरीक्षण और आत्मनियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।

अंततः, समय जीवन का वह दर्पण है, जिसमें हमारे कर्मों की सच्ची छवि दिखाई देती है। जो समय का सम्मान करता है, समय भी उसका सम्मान करता है। हमें चाहिए कि हम हर दिन को उद्देश्य के साथ जिएँ, हर क्षण को सार्थक बनाएँ और यह समझें कि समय का सर्वोत्तम उपयोग ही एक सफल, संतुष्ट और अर्थपूर्ण जीवन की कुंजी है।

रिश्तों की कैमिस्ट्री

उदय प्रताप सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

धरती पर जब से मानव का उद्भव हुआ है तब से मानवीय संबंध इतनी भयावय स्थिति में कभी नहीं पहुंचे थे जितने की आज मालूम होते हैं। आज आपसी संबंधों का स्तर इतना नीचे गिर गया है कि कल्पना करना भी मुश्किल है। संबंधों में आई ये गिरावट एक बड़े संकट की ओर इशारा करती है। इशारा ये है कि आज समाज का ताना-बाना बुरी तरह से टूट रहा है। ताना-बाना टूट कर बिखर रहा है, तार-तार हो रहा है। मानवीय मूल्य जिन पर समाज की नींव टिकी होती है वे समाप्त होते जा रहे हैं। संबंधों में आई गिरावट पर बात करने से पहले यहाँ थोड़ा संबंधों के बारे में विचार कर लेना आवश्यक है।

यदि हम विचार करें तो पाएंगे कि हमारे चारों तरफ संबंधों का एक जाल है, एक ताना-बाना सा बुना हुआ है जिसमें हम एक दूसरे से जुड़े हैं, परस्पर संबंधित हैं और एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। यही ताना-बाना हमारा समाज कहलाता है और हम इसी समाज का हिस्सा हैं और इसी के मध्य में रहते हैं और अपना जीवन व्यवहार करते हैं। जंजीर की कड़ी की भाँति समाज की भी प्रत्येक इकाई इस समाज रूपी ताने-बाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसीलिए समाज की सभी कड़ियों का मजबूत होना जरूरी है। कड़ियों की मजबूती उनके आपसी संबंधों के स्थायित्व पर निर्भर करती है।

किसी भी सशक्त समाज की आधारशिला उसके आपसी संबंधों पर निर्भर करती है। संबंध जितने मधुर और स्थाई होंगे समाज उतना ही अधिक फले-फूलेगा, उतनी उसकी उन्नति होगी, उसके नागरिक उतने ही अधिक सुशिक्षित और संस्कारवान होंगे, ये सब सामाजिक संबंधों पर ही निर्भर करता है। जीवन में संबंधों का उतना ही महत्व है जितना कि जीवन का। हमारे जीवन का आधार ही हमारे संबंधों पर टिका है। हमारा जीवन हमें संबंधों से ही मिला है। हमारा जीवन हमारी खुद की देन नही है, हमारे माता-पिता की देन है और इसीलिए माता-पिता से हमारा संबंध सबसे प्रगाढ़ होता है। इसमें भी संतान का संबंध पिता से अधिक माता से गहरा होता है क्योंकि संतान को माता एक तो अपने गर्भ में महीनों तक धारण करती है दूसरा हम प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं कि जन्म के समय नाल द्वारा संतान माता से जुड़ी रहती है, जब तक संतान नाल द्वारा माता से जुड़ी होती है तब तक उस का अपनी माता के सिवा अन्य किसी से कोई संबंध नहीं होता है, हो भी नहीं सकता है। संतान का पहला संबंध प्रत्यक्ष रूप से माता के साथ होता है और इसीलिए यदि संतान चाहे तो भी माता के जैसा संबंध वह और किसी के साथ नहीं स्थापित कर सकती है। जननी का भी वैसा लगाव, प्रेम और वात्सल्य किसी दूसरे के साथ नहीं हो सकता है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है इसमें कहीं कोई दो राय नहीं है। माता के बाद वही संतान पिता, और फिर समय के साथ भाई-बहन, दादी-बाबा, नानी-नाना, तथा अन्य रिश्तों से परिचित होता है और तद्नुरूप वह परिवार और समाज में व्यवहार करता है।

जो बच्चा बचपन में सभी रिश्तों और संबंधों को समान आदर व सम्मान देता है, अपने चचेरे भाई-बहनों और बाल सखाओं को भी अपने सगे भाई-बहनों के समान ही प्यार और दुलार करता है, वही बच्चा बड़ा होकर जब तथाकथित समझदार हो जाता है तो अपने ही सगे रिश्तों में अपने ही रिश्तेदारों से इतना अधिक खिन्न हो जाता है। उनसे इतनी अधिक दूरी बना लेता है और इस कदर नफरत करने लगता है कि अपने ही सगे संबंधियों पर बंदूक तान देता है, तलवार, हांसिया और गड़ासा उठा लेता है, लाठी-डंडों से उनकी पिटाई करता है। जरा भी नहीं हिचकता है, एक बार भी नहीं सोचता है कि वह क्या कर रहा है। जीवन पर्यंत के लिए उनका दुश्मन बन जाता है। माता-पिता को गाली गलौज करने लगता है। उन्हें मारता-पीटता है, उन्हें उन्हीं के घर में पराया कर देता है। घर से बाहर निकाल देता है, रोता-बिलखता हुआ असहाय छोड़ देता है। कभी-कभी तो उन्हें वृद्धाश्रम तक में छोड़ने में गुरेज नहीं करता है।

संवेदनहीनता की पराकाष्ठा तो देखिए कि कुछ कुल कपूत तो अपने माता-पिता जो उन्हें इस दुनिया में लातें हैं, उन्हें अपने रक्त से सींचते हैं उनसे ही छुटकारा पाने के लिए,उन्हें रेलवे स्टेशन या किसी मेले या भीड़ भरी जगह में छोड़ कर इतिश्री कर लेते हैं। ऐसी खबरें पढ़ कर देह में सिहरन सी होने लगती है, मन कचोटने लगता है, रोंए खड़े हो जाते हैं। पता नहीं ऐसे कुलदीपक और सपूत कौन सी घड़ी में अपने खानदान का उद्धार करने के लिए पैदा होते हैं। कमाल की बात तो यह है कि ये वही माता-पिता होते हैं जो अपने बच्चों के जन्म के लिए कितने जतन करते हैं। पूजा, पाठ, हवन, यज्ञ, व्रत, नियम-धर्म, मंदिर-मस्जिद, पीर, फकीर, चौखट, चादर, माला, ताबीज और पता नहीं कितनी और क्या-क्या मन्नतें मांगते हैं। संतान के लिए माता-पिता किस-किस की मिन्नतें नही करतें हैं। तीर्थ-यात्राएं करते हैं, उनके जन्म के समय दिल खोल कर पैसे उड़ाते हैं और खूब खुशियाँ मनाते हैं। खूब मिठाईयाँ बाटते हैं, खुशी में फूले नहीं समाते हैं।

अब यह प्रश्न यह उठता है कि इन संतानों में ऐसा क्या परिवर्तन हो जाता है या फिर यूँ कहें कि ऐसा क्या घटित होता है जो इतने मजबूत रिश्तों को तार-तार कर देता है। यह स्थिति क्यों और कैसे पैदा होती है। ऐसा क्या हो जाता है जो संबंधों में कड़वाहट इस हद तक बढ़ जाती है कि सगे भाई एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। भाई-भाई में जरा सी बात पर अन-बन होने लगती है। एक छोटे से जमीन के टुकड़े के लिए उम्र भर का बैर बन जाता है। कभी-कभी तो बित्ते भर जमीन के लिए सगे भाईयों में हत्याएं तक हो जाती हैं। फिर वही बैर पीढियों तक चलता रहता है। रिश्तों की यह पहेली आज तक अनसुलझी ही लगती है। रिश्तों की ये कौन सी कैमिस्ट्री है जो किसी के समझ में नहीं आती है। हमारा समाज इस गुत्थी को सुलझाने में नाकाम ही रहा है। कम से कम मुझे तो यही लगता है। जितना इसको सुलझाने की कोशिश की गई है उतना ही और उलझी है। मनुष्य के मष्तिक में कौन सा ऐसा रसायन है जो रिश्तों को इस हद तक बर्बाद करने की क्षमता रखता है। बचपन के वे सुनहरे पल, वो साथ-साथ का खाना-पीना, उठना-बैठना, खेलना-कूदना, हँसी-ठिठोली, शरारतें और वो निश्छल प्रेम और लगाव मात्र क्षण भर में सबकुछ खत्म हो जाता है।

यदि हम चिंतन करें तो महसूस करेंगे कि इस संसार में सभी प्राणी सहअस्तित्व की अवधारणा पर जीवित हैं। सहअस्तित्व से हमारा तात्पर्य यह है कि हम एक दूसरे पर निर्भर हैं और एक दूसरे के पूरक भी हैं। पूरी सृष्टि एक दूसरे को आधार प्रदान करती है, न सिर्फ आधार प्रदान करती है बल्कि उसका समर्थन भी करती है। प्रकृति के इसी नियम के कारण सदियों से ये आभासी संसार निरंतर गतिमान होकर चलता चला आ रहा है। यद्यपि ये संसार आभासी है तथापि अपनी निरंतरता के कारण हमें सत्य प्रतीत होता है। इसको दूसरी तरह से समझें तो ये पूरी सृष्टि एकात्मक रूप में है, अलग-अलग नहीं है। इसीलिए इसका एक अंग दूसरे अंग को सहारा देता है न सिर्फ सहारा देता है बल्कि उसका पूरक बन कर उसे समर्थ भी बनाता है। ठीक उसी तरह यही नियम संबंधों और रिश्तों पर भी लागू होता है। जब तक बच्चा माँ के गर्भ में माँ के साथ एकाकार रहता है तब तक वह वही पोषण पाता है जो माँ खाती-पीती है। माँ के पोषण से ही बच्चा पोषित होता है। माँ से अलग होने के बाद उसमें अनेक परिवर्तन आते हैं। बाहरी दुनिया के संपर्क में आने पर वह अच्छा-बुरा सब सीखता है। संबंधों के प्रति उसमें तब तक कटुता नहीं आती जब तक उसमें लालाच का अंकुर नहीं फूटता है।

लालच एक ऐसा अवगुण है मनुष्य के अंदर जो उसके पूरे जीवन और उसकी उपलब्धियों को नष्ट कर देता है। मानव जीवन को अर्थहीन बना देता है। जिस मनुष्य के अंदर लालच बढ़ जाता है उसके जीवन में अन्य अवगुणों की आवश्कता नहीं रहती। लालच ही वो बला है जो मनुष्य के रिश्तों का दुश्मन है, सभी संबंधों का वैरी है। मनुष्य के मस्तिष्क में विद्यमान यह एक ऐसा रसायन है जो यदि आवश्यकता से अधिक बढ़ जाए तो अपना और अपनों का जीवन नरक बना देता है। इसीलिए लालच को एक बुरी बला कहा गया है। कहते हैं कि ‘लालच बुरी बला है’ जितनी बुरी बला इसे कहा गया है यह उससे भी कहीं ज्यादा बुरी है। जब तुम्हारे अपने ही तुमसे खफ़ा रहने लगें तो फिर जीवन का क्या मोल है। छोटा भाई अपने जिन बड़े भाईयों को हमेंशा पिता तुल्य आदर और सम्मान करता है उन्हें ही गाली-गलौज करने लगता है, वो भी जरा से जमीन के टुकड़े के लिए। इतनी गंदी गालियाँ देता हैं वो भी सरेआम कि सुनने वालों के कानों से खुन निकल पड़े। इतना लालच, धिक्कार है ऐसे जीवन को। इसे ही कहते हैं कि लालच में अंधा हो जाना। दूसरी तरफ देखा गया है कि बड़े भाई जरा सा भी दबने को तैयार नही होते और क्षण मात्रमें रिश्ता खत्म कर लेते हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने छोटे भाईयों से स्नेह करें। जिन्हें तुमने अपनी संतान की तरह ही स्नेह किया है, पालन-पोषण किया है उनके प्रति इतने कठोर बन जाना कि अपना मानने से ही इंकार कर देना। अपने छोटे भाईयों को समझाने की बजाय उनका सामाजिक बहिष्कार कर देना। उनके प्रति अपने मन में बैर पाल लेना, उनका तिरस्कार करना, इससे संबंध सुधरते नहीं बल्कि हमेशा के लिए खत्म हो जाते हैं। ये नादानी की पराकाष्ठा है।

लालच को त्याग से ही जीता जा सकता है। रिश्तों में जो लोग बड़े होते हैं, उन्हें चाहिए कि वे संबंधों में स्नेह बनाए रखने के लिए त्याग का सहारा लें। रिश्तों में थाड़ा सा त्याग करके हम उन्हें बचा सकते हैं। संबंधों में आने वाली कटुता को कम कर सकते हैं। ये सर्व विदित है कि हाथ की पाँचों उगलियाँ बराबर नहीं होती हैं। ठीक उसी प्रकार समाज में सभी लोग या परिवार में सभी भाईयों की आर्थिक स्थिति भी एक समान नही होती है। जिनकी स्थिति कमजोर हो, मजबूत स्थिति वालों को उन्हें सहारा देना चाहिए, और हां इसे उन पर किया गया अहसान नहीं समझना चाहिए, इसे पारिवारिक कर्तव्य और दायित्व समझना चाहिए। इस कर्तव्य को सभी को निभाना चाहिए। यदि परिवार का कोई सद्स्य या छोटे भाई गलत रास्ते पर चले गए हैं या बहकावे में आकर लालच के वशीभूत हो गए हैं तो भी उन्हें समझा बुझा कर रिश्तों की अहमियत को बताते हुए सही राह पर लाना बड़े भाईयों का कर्तव्य बनता है। उन्हें समझाना चाहिए कि रिश्तों के बिना जीवन नीरस है, एकाकी है। रिश्तें ही हमारी असली ताकत है, हमारा अभिमान हैं, हमारा संबल हैं जिन पर हमें गर्व होता है। उन्हें यह भी समझाना चाहिए कि रिश्तें हमारी पहचान हैं। जीवन में मधुर रिश्ते न हों तो जीवन एक सजा के समान हो जाता है। जिनके जीवन में अच्छे रिश्तों की पूंजी होती है उनका जीवन यूँ ही हँसते-खेलते गुजर जाता है, उम्र कब कट जाती है पता ही नहीं चलता है।

रिश्तों में गाँठ पड़ जाए तो आसानी से नहीं खुलती है। कड़वाहट जल्दी दूर नहीं होती है। मन में हमेंशा कसक सी बनी रहती है। हमारे रिश्तें भावनाओं की एक अत्यंत नाजुक डोर से बंधे होते हैं। रिश्तों की डोर इतनी नाजुक होती है कि इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 'एक शब्द' मात्र से वह नाजुक डोर क्षण मात्र में ही टूट जाती है। एक कड़वा शब्द, एक कड़वा वाक्य गहरे से गहरे रिश्ते को हमेंशा-हमेशा के लिए समाप्त कर देता है। रिश्ते में जहर घोल देता है। कितने नाजुक होते हैं ये रिश्ते। इसीलिए रिश्तें निभाना और उन्हें संजो कर रखना एक महानता की ही निशानी है। रिश्तों को मजबूत बनाए रखने के लिए आपसी सामंजस्य बहुत जरूरी है। रिश्तों को उचित महत्व देना परिवार के सभी सदस्यों का दायित्व है। आज के समय में रिश्तों का संवरण और भी अधिक आवश्यक हो गया है। आज परिवार बहुत तेजी से टूट रहे हैं, पारिवारिक रिश्ते बिखर रहे हैं। हमें रिश्तों को संजोना पड़ेगा, जीवन में उनके महत्व को समझना पड़ेगा। हमें अपने अहम भाव से ऊपर उठकर सोचना पड़ेगा तभी रिश्ते बचेंगे। अहम भाव रिश्तों को खत्म कर देता है। रिश्तें ही हमारे जीवन का आधार हैं, हमारी प्रेरणा को स्रोत हैं, वे हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। रिश्तें हमें जीने की प्रेरणा देते हैं। घर परिवार में यदि रिश्तें मधुर हों तो सब एक दूसरे से खुल कर बातें करते हैं, सबका दुख-सुख बाँटते हैं। जहाँ एक तरफ गिले-शिकवे होते हैं तो वहीं दूसरी तरफ हँसी ठिठोली भी होती है। घर स्वर्ग सा महसूस होता है। घर के सभी सदस्य अवसाद और तनाव से मुक्त रहते हैं।

रिश्तों को मधुर बनाए रखने और उन्हें संजोए रखने का यही रसायन है कि हमें छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए। अपने लालच को नियंत्रण में रखना चाहिए। इस बात का आत्म चिंतन करते रहना चाहिए कि कहीं हमारा लालच रिश्तों पर भारी तो नहीं पड़ रहा है। हमेशा आपसी सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। बड़ों को बड़प्पन दिखाना चाहिए। जो रिश्तें में छोटे हैं उन्हें अपने बड़ों का आदर सम्मान करना चाहिए। ऐसा करने से ही हमारे रिश्ते जीवंत और मधुर बने रह पाएंगे और जीवन खुशहाल बना रहेगा।

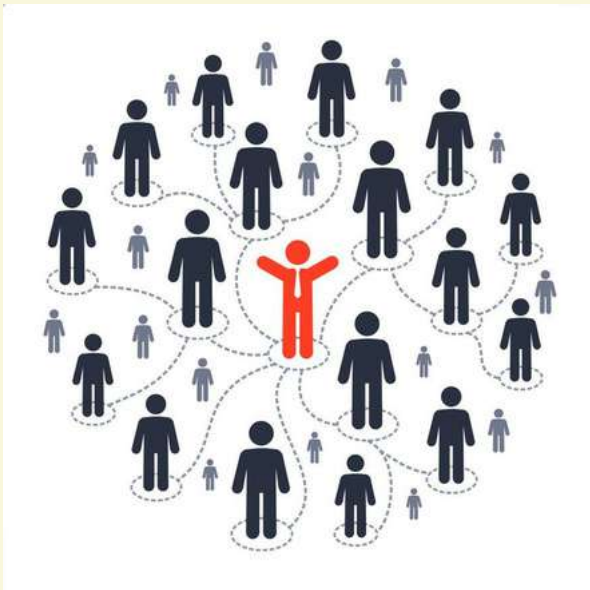

भारतीय संगीत वाद्ययंत्र

शिवप्रिया बी.
वरिष्ठ लेखाधिकारी (से.नि.)

भारतीय संगीत वाद्ययंत्र न केवल हमारे देवी-देवताओं से जुड़े रहे हैं, बल्कि प्राचीन काल से हमारी भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक अनिवार्य हिस्सा भी हैं। यहाँ भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों के विकास की एक यात्रा है क्योंकि हम वेदों, महाकाव्यों और संस्कृतियों के समय से लेकर वर्तमान तक उनके विकसित होने के निशान पाते हैं।

संगीत वाद्ययंत्र महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आधारशिला हैं, जो पहचान, अनुष्ठान, सामाजिक बंधन और कहानी कहने के साधन के रूप में कार्य करते हैं, किसी समुदाय के इतिहास, विश्वासों और मूल्यों को समाहित करते हैं, और साझा परंपराओं और अनूठी ध्वनियों के माध्यम से पीढ़ियों को जोड़ते हैं। वे शब्दों से परे संचार को सुगम बनाते हैं, जीवन के विभिन्न चरणों को चिह्नित करते हैं, विरासत को संरक्षित करते हैं और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं, सांस्कृतिक कलाकृतियों के रूप में कहानियाँ सुनाते हैं और समुदायों को जोड़ते हैं।

यदि हम भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों के बारे में जानकारी के स्रोतों पर वापस जाते हैं तो हम उन्हें कई संस्कृत ग्रंथों, पवित्र पुस्तकों, साहित्य, विज्ञान, संगीत, प्राचीन मूर्तियों, भित्ति चित्रों और चित्रों और लोककथाओं में पाते हैं।

आज के संगीत वाद्ययंत्रों को देखते हुए, हम पाते हैं कि वे उन उच्च विकसित रूपों तक पहुंचने के लिए कई शताब्दियों के माध्यम से विकास और विकास की एक लंबी प्रक्रिया से गुजरे हैं जो हम उन्हें अभी पाते हैं। समय के साथ, कई वाद्ययंत्र अस्पष्ट हो गए, क्योंकि बजाने की तकनीक, डिजाइन और उनके उपयोग के संदर्भ में समय की आवश्यकता के अनुरूप नए वाद्ययंत्र विकसित हुए।

इस प्रकार, हम पाते हैं कि अंबुजा, अल्पाइन, परिवाड़ी और मट्टकोलीला जैसे प्राचीन तार वाद्ययंत्र आधुनिक वीणा, सितार, सरोद और इसराज में विकसित हुए। जबकि खीरी, धुंधली और अन्य प्राचीन ड्रम जैसे तालवाद्य मृदंगम, तबला और पखावज में विकसित हुए।

भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों को कई प्रकारों में विभाजित किया गया है, अर्थात्, तार वाला वाद्य यंत्र (वीणा, सितार) थुल्लई (बांसुरी, नादस्वरम) थोली (मृदंगम, तविल, तबला) और झांझ (ताल) ।

भारत के नाट्यशास्त्र के अनुसार, संगीत वाद्ययंत्रों के चार वर्ग हैं:

01. तत या तांतू वाद्या (तार)
02. सुशिर वाद्या (हवा)
03. अवनाध वाद्या (तालवाद्य या ढोल)
04. घाना वाद्या (घंटी, झांझ और गोंग) ।

01. तार वाले उपकरण (Stringed instruments)

(i) वीणाः देवी सरस्वती का वाद्य, पारंपरिक दक्षिण भारतीय संगीत का दिल।

(ii) सितारः हिंदुस्तानी संगीत में एक लोकप्रिय, लंबी गर्दन वाला तंत्रिका वाद्य।

(iii) तंबूराः श्रुति (पिच) देने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सहायक

(iv) वायलिनः हालाँकि यह एक पश्चिमी वाद्य है, लेकिन भारतीय संगीत में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

02. पवन वाद्ययंत्र (Wind instruments)

(i)बांसुरी बाँस से बना एक संगीत वाद्य है।

(ii)नादस्वरमः मंदिर और मंगला प्रदर्शनों में बजाया जाने वाला एक बड़ा ताल वाद्य।

(iii)शहनाईः शादियों जैसे समारोहों में बजाया जाने वाला एक पारंपरिक वाद्य।

03. पर्क्यूशन वाद्ययंत्र (ड्रम) (Percussion Instruments)

(i)मृदंगमः दक्षिण भारतीय कर्नाटक संगीत में लय का राजा।

(ii)थविलः नादस्वरम के साथ एक ताल वाद्य।

(iii)तबलाः हिंदुस्तानी संगीत की लय और संगत के लिए महत्वपूर्ण है।

(iv)ढोलकः लोक संगीत में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला एक प्रकार का ड्रम।

04. **'स्वयं-ध्वनि': इडियोफोन और अन्य उपकरण**

(i)घुंगरू की घंटियाँ नर्तकियों के पैरों पर बंधी होती हैं।

(ii)संतूरः कश्मीर का एक बहु-तार वाला मधुर वाद्य।

(iii) ज़ाइलोफोन, घंटी, त्रिकोण (triangle), मराकास (Maracas), गोंग, etc

भारत की विविध संस्कृति इसके संगीत वाद्ययंत्रों में भी परिलक्षित होती है, जिनमें से प्रत्येक का एक अनूठा ध्वनि और सांस्कृतिक महत्व है। इन भारतीय संगीत वाद्ययंत्र प्राचीन काल से ही, सरस्वती देवी की वीणा से लेकर आधुनिक सितार और तबला तक, कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।

राष्ट्र-निर्माण में शिक्षा का महत्व

वेदानंद पाण्डेय
सहायक लेखाधिकारी

परिचय

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी शिक्षा-व्यवस्था होती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास में सहायक होती है, बल्कि समाज में जागरुकता, समानता, नवाचार और जिम्मेदारी की भावना भी उत्पन्न करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि राष्ट्र-निर्माण के लिए एक जागरूक, प्रशिक्षित और सशक्त जनशक्ति आवश्यक है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत में शिक्षा ने देश के सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और आर्थिक विकास को दिशा दी है।

राष्ट्र-निर्माण और शिक्षा

राष्ट्र-निर्माण एक व्यापक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें समाज, संस्कृति, राजनीति, अर्थव्यवस्था और नागरिकों के विचार-सब एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। इन सभी के केंद्र में जो शक्ति सबसे प्रभावशाली रूप से कार्य करती है, वह शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व को आकार देती है, उसके भीतर विवेक, साहस, जिज्ञासा और मानवता जैसी मूलभूत शक्तियाँ विकसित करती है। यह नागरिकों को केवल जानकारी ही नहीं देती, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार, नैतिक और देशभक्त व्यक्ति बनने के लिए तैयार करती है। इसलिए कहा जाता है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति उसके शिक्षित नागरिक होते हैं। शिक्षा जितनी सशक्त होगी, राष्ट्र उतना ही मजबूत, संगठित और प्रगतिशील बनेगा।

भारत में शिक्षा की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं। प्राचीन भारत की शिक्षा-व्यवस्था विश्व के लिए एक उदाहरण थी। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं थी; यह जीवन-व्यवहार, नैतिकता, साहस, अनुशासन और श्रम की गरिमा का पाठ पढ़ाती थी। विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर प्रकृति के बीच शिक्षा ग्रहण करते थे। उनमें आत्मनिर्भरता, धैर्य, विद्वता और समाज-सेवा की भावना विकसित की जाती थी। इसी काल में तक्षशिला और नालंदा जैसे विशाल शिक्षा-केंद्रों का विकास हुआ। तक्षशिला विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय माना जाता है, जहाँ राजनीति, चिकित्सा, गणित, सैन्य विज्ञान, दर्शन, ज्योतिष और भाषाओं सहित 60 से अधिक विषय पढ़ाए जाते थे। नालंदा विश्वविद्यालय की ख्याति इतनी व्यापक थी कि यहाँ चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत और सुदूर एशिया से हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। नालंदा में मौजूद सुव्यवस्थित पुस्तकालय, विद्वान शिक्षक और शोध-परंपरा यह प्रमाणित करते हैं कि भारत ज्ञान और शिक्षा का वैश्विक केंद्र था।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा की दिशा में परिवर्तन आए। मुस्लिम शासन के समय अरबी, फारसी, इतिहास, गणित, दर्शन और इस्लामी अध्ययन की शिक्षा दी जाती थी। वहीं गुरुकुल और पाठशालाएँ भी समाज की परंपरागत शिक्षा का वहन करती रहीं। इस काल में भारतीय समाज में भक्ति और सूफी आंदोलन तेजी से उभरे। कबीर, गुरु नानक, मीरा, दादू दयाल और अन्य संतों ने समाज में समानता, प्रेम, भाईचारा और आध्यात्मिक ज्ञान का संदेश फैलाया। उन्होंने बताया कि शिक्षा केवल किताबों से नहीं, बल्कि व्यवहार, समभाव और नैतिकता से भी प्राप्त होती है। इस इस काल की शिक्षा ने भारतीय समाज में एकता और सांस्कृतिक समन्वय को मजबूती प्रदान की, जो राष्ट्र-निर्माण की एक महत्वपूर्ण नींव मानी जाती है।

आधुनिक काल में भारत में शिक्षा का स्वरूप अंग्रेज़ों की नीतियों के प्रभाव में बदलने लगा। 1835 में मैकॉले की शिक्षा नीति लागू की गई, जिसने अंग्रेज़ी आधारित आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया। यद्यपि इसका लक्ष्य भारतीयों को प्रशासनिक भूमिकाओं के लिए तैयार करना था, किन्तु इसी शिक्षा के माध्यम से भारत में आधुनिक विचारधारा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वतंत्रता की चेतना का विकास हुआ। रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद जैसे महान विचारकों ने शिक्षा को समाज-सुधार और राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार बनाया। टैगोर ने शांति निकेतन के रूप में शिक्षा को कला, संस्कृति और प्रकृति के सुंदर सम्मिश्रण से जोड़कर नई दिशा दी। गांधीजी ने 'नैतिक शिक्षा' और 'बेसिक एजुकेशन' की अवधारणा प्रस्तुत कर श्रम एवं व्यावहारिक ज्ञान को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण की सबसे महत्त्वपूर्ण प्राथमिकता माना। संविधान सभा में डॉ. भीमराव आंबेडकर ने शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। वे मानते थे कि शिक्षा ही वह साधन है जो सामाजिक भेदभाव को समाप्त कर सकता है और प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्रदान कर सकता है। उनका जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण था कि शिक्षा सामाजिक उत्थान की सबसे बड़ी शक्ति है। डॉ. आंबेडकर ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर न केवल संविधान के निर्माण मे प्रमुख भूमिका निभाया, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने का आंदोलन भी चलाया।

वैज्ञानिक क्षेत्र में भी शिक्षा ने भारत को नई पहचान दिलाई। डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने भारत के परमाणु कार्यक्रम की नींव रखी और देश को वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया। प्रोफेसर सतीश धवन ने अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को विश्व मंच पर अग्रणी संस्थान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में भारत ने उपग्रह प्रक्षेपण और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम-जिन्हें 'मिसाइल मैन' कहा जाता है-ने विज्ञान और तकनीक के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके सरल जीवन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शिक्षा के प्रति गहरी आस्था ने लाखों युवाओं को प्रेरित किया। वे हमेशा कहते थे कि "एक शिक्षित मन ही महान राष्ट्र की नींव रख सकता है।"

आज के दौर में शिक्षा के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमता, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा को नए कौशलों के साथ जोड़ा जा रहा है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा को कौशल, शोध, नवाचार और सृजनात्मकता से जोड़कर इसे 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया है। आज शिक्षा केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक उन्नति, सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण का आधार बन चुकी है।

अंततः, राष्ट्र-निर्माण में शिक्षा का महत्व अपरिमेय है। प्राचीन गुरुकुलों से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक, नालंदा की दीपशिखा से लेकर इसरो की सफलताओं तक, भारत की प्रगति का हर कदम शिक्षा का ही परिणाम है। शिक्षित नागरिक ही देश को कमजोरियों से उबारकर विकास की राह पर ले जा सकते हैं। शिक्षा व्यक्ति को जागरूक बनाती है, समाज को संगठित करती है और राष्ट्र को भविष्य के लिए सक्षम बनाती है। इसीलिए कहा गया है "शिक्षा वह शक्ति है जो अंधकार को प्रकाश में, दुर्बलता को सामर्थ्य में और राष्ट्र को विकास में परिवर्तित कर देती है।"

बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान

हिमांशु पटेल
लेखाकार

कर्नाटक भारत का एक प्रमुख पर्यटक राज्य है। यह अपने प्रतिष्ठित महलों, धार्मिक स्थलों और समृद्ध विरासत के साथ- साथ अपने राष्ट्रीय उद्यान के लिए भी जाना जाता है। वनस्पतियों और जीवों की समृद्ध विविधता के लिए प्रसिद्ध यह राज्य भारत के 25% से अधिक हांथी और 15% बाधों सहित अन्य कई दुर्लभ और लुप्त प्राय प्रजातियों के संरक्षण के रूप में कार्य करता है जिसके कारण कर्नाटक में कई राष्ट्रीय उद्यान स्थापित किये गये हैं।

बाँदीपुर राष्ट्रीय उद्यान को भारत के सबसे खूबसूरत और बेहतरीन प्रबंधन वाले राष्ट्रीय उद्यानों में से एक माना जाता है। यह कर्नाटक राज्य के चामराजनगर जिले में स्थित है। 874 वर्ग किमी० क्षेत्र में फैला यह उद्यान मैसूर शहर से 80 किमी. की दूरी पर एक प्रमुख पर्यटन स्थल ऊटी जाने वाले मार्ग पर पश्चिमी घाट के पहाड़ो के बीच सुरम्य वातावरण में स्थित है। इसकी वजह से बहुत से पर्यटन यातायात बांदीपुर से होकर गुजरते हैं और वाहनों से हुई टक्कर के कारण साल भर में कई वन्य प्राणियों की मृत्यु हो जाती है। बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान भारत का सबसे बड़ा जीवमंडल रिजर्व बनाता है जिसे 'नीलगिरी जीवमंडल रिजर्व' के नाम से जाना जाता है।

यह राष्ट्रीय उद्यान 'प्रोजेक्ट टाइम के तहत सन् 1973 में एक 'टाइगर रिजर्व के रूप में स्थापित किया गया था। यहां शुष्क पर्णपाती वन प्रमुख हैं। सुंदर वन्य जीवन, सागौन और चंदन के पेड़ों के साथ बाघ भी अच्छी संख्या में हैं। इस प्राकृतिक निवास में सांभर, गौर, चीतल, पिसूरी, चार सींग वाला काला हिरन, जंगली कुत्ते, जंगली सुअर, सियार, तेंदुभा, मालाबार गिलहरी, जंगली मुर्गे और हरे कबूतर जैसे जीव जन्तु निवास करते हैं। जिन्हें आप एक पर्यटक के रूप में स्वतंत्र रूप से घूमते हुए देख सकते हैं। पारिस्थितिकी के संरक्षण में भारत के प्रयासों में इस उद्यान का विशेष महत्व है।

कौन सही, कौन गलत?

दलीप सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

एक समय था जब पृथ्वी पर जीवन का नियम केवल एक था: **शक्ति ही जीवन है**। घने, प्राचीन जंगल में, जहाँ सूर्य की रोशनी भी मुश्किल से छनकर आती थी, वहाँ विभिन्न प्रजातियाँ रहती थीं। वे सभी एक-दूसरे से डरते थे। हर प्रजाति में कोई न कोई अनुवांशिक असामान्यता थी, जिसने उन्हें अनोखा और खतरनाक बना दिया था।

मनुष्य और अन्य प्रजातियों के बीच सह-अस्तित्व का संघर्ष अपनी चरम सीमा पर था। ऐसे ही भयावह माहौल में, एक मानव परिवार – **पिता, माँ, और उनका छोटा बच्चा** – जान बचाने के लिए भाग रहा था। वे नरभक्षी प्रजातियों से बचने के लिए एक अंधेरी, नम गुफा में छिप गए।

दस दिन बीत गए

दस दिन तक उन्होंने गुफा से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं की। भूख उनके पेट को मरोड़ रही थी, लेकिन बाहर कदम रखना मौत को दावत देने जैसा था। आखिर, पिता ने एक गहरा, दर्दभरा फैसला लिया। वह जानते थे कि अगर वे यहीं रहे तो भुखमरी से मरेंगे, इसलिए उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर भोजन खोजने का निश्चय किया।

जैसे ही पिता गुफा से बाहर निकले, उनकी नज़र एक **उड़ने वाली प्रजाति** पर पड़ी। उसका शरीर नीले-काले पंखों से ढका हुआ था। भूख और दहशत ने पिता को सोचने का मौका नहीं दिया। उन्होंने ज़मीन से एक भारी पत्थर उठाया और पूरी ताक़त से उस प्राणी पर वार किया। एक भयानक चीख़ के साथ, वह प्राणी ज़मीन पर गिर पड़ा और मर गया।

पिता ने अपने परिवार के लिए शिकार को उठाया। तभी उनकी नज़र ज़मीन पर पड़ी, जहाँ उन्हें कुछ **नीली बेरी** बिखरी हुई दिखीं। उन्होंने शिकार को उठाया और तेज़ी से गुफा की ओर भागे।

गुफा के अंदर, परिवार ने हड़बड़ी में उस प्राणी का मांस खाया। भोजन पेट में जाते ही, एक भयानक चीख़ पूरे गुफा में गूंज उठी। उन्होंने हिंसक रूप से छटपटाना शुरू कर दिया। वे उस अपरिचित मांस को पचा नहीं पाए। कुछ ही पल में, **माँ और छोटा बच्चा** की मृत्यु हो गई।
पिता सदमे में थे, उनका शरीर दर्द से काँप रहा था, लेकिन वह किसी तरह बच गए। तभी, **कहीं से एक और छोटा बच्चा** उनके सामने आया।

पिता ने उस बच्चे को देखा। उसके शरीर की बनावट और रंग उन्हें पहचाना हुआ लगा। उनकी नज़र उस नीली बेरी पर गई जो उन्हें शिकार के पास मिली थी। अचानक, सब कुछ उनके सामने स्पष्ट हो गया: **जिस प्राणी को उन्होंने मारा था, वह अपने बच्चे के लिए नीली बेरी जमा कर रही थी। वह भी अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही थी, और पिता ने अपनी भूख मिटाने के लिए उसे मार डाला था।**

पिता की आँखों से आँसू बहने लगे। वह एक पल में हत्यारा बन गया था। जंगल के नियम ने उनसे उनका परिवार छीन लिया था, और उनकी भूख ने एक माँ को उसके बच्चे से छीन लिया था।

उन्होंने उस बच्चे को गोद में उठा लिया। अब उसके पास कोई नहीं था, और पिता के पास भी कोई नहीं बचा था।

"कौन सही, कौन गलत?" इस सवाल का कोई जवाब नहीं था। पिता ने फैसला किया कि वह इस बच्चे को अपना मानकर पालेंगे। यह उस क्रूर संघर्ष और अपराधबोध का बोझ था, जिसे उन्हें अब अपने जीवन भर ढोना था।

उम्मीद की एक किरण

विजय सिंह धीरावत
लेखाकार

नागराजू डी. एन. कर्नाटक के पहाड़ी और शांत इलाके में बसे एक छोटे-से गाँव में रहते थे। वहाँ बिजली की स्थिति अनिश्चित थी—कभी आती, कभी चली जाती। इंटरनेट तो मानो मेहमान की तरह कभी-कभार ही दिखाई देता था। नागराजू ने सरकारी स्कूल से पढ़ाई की थी, लेकिन उनकी आँखों में सपने आसमान जितने बड़े थे।

नागराजू बचपन से ही तकनीक में रुचि रखते थे। टूटे हुए रेडियो को खोलकर देखना, पुरानी घड़ी के पेंच कसना या पड़ोस के मोबाइल फोन में छोटी-मोटी दिक्कतें ठीक करना – यह सब उन्हें किसी रोमांच से कम नहीं लगता था। लेकिन गाँव की परिस्थितियाँ और परिवार की ज़िम्मेदारियाँ अक्सर सपनों के रास्ते में रुकावट बन जाती थीं।

परिवार साधारण था, आय सीमित थी, और घर की जिम्मेदारियाँ अक्सर उनके कंधों को भारी बना देती थीं। फिर भी नागराजू के मन में यह दृढ़ विश्वास था कि “मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।”

<u>लालटेन की रोशनी में सपनों की तैयारी</u>

पढ़ाई का माहौल ज्यादा नहीं था, लेकिन उसकी इच्छा शक्ति किसी तेज जलते दीपक की तरह थी। रात के सन्नाटे में, गाँव की पगडंडियों पर हवा सरसराती रहती और उसी में लालटेन की टिमटिमाती लौ के पास नागराजू बैठकर पुस्तकों का अभ्यास करता। लालटेन की रोशनी में पड़ती परछाइयाँ उसे पढ़ाई में बाधा नहीं, बल्कि सफलता के बीच आने वाले बाधाओं का प्रतीक लगती थीं। हर रात वह खुद से कहता—
“सपनों की राह आसान नहीं होती, लेकिन मैं रुकने वाला नहीं हूँ।”

<u>गाँव के बुज़ुर्ग और माँ का विश्वास</u>

गाँव के बुजुर्ग उसे हमेशा हौसला देते, “बेटा नागराजू, मेहनत करने वालों को भगवान भी रास्ता दिखा देता है।”
उसकी माँ हमेशा उसका साथ देती। घर की तंगी के बावजूद, जब खेतों में मदद की उम्मीद होती, तब भी माँ कहती—“तू बस पढ़ ले... एक दिन तू हम सबकी किस्मत बदल देगा।”
यह वाक्य नागराजू के लिए किसी वरदान से कम नहीं था।

<u>नई उम्मीद – कॉन्ट्रैक्चूअल एम.टी.एस. की भर्ती</u>

एक दिन गाँव के एक शिक्षक ने उन्हें बताया कि ए.जी. ऑफिस में कॉन्ट्रैक्ट एम.टी.एस. के पदों के लिए भर्ती निकली है। यह सुनते ही नागराजू की धड़कन तेज हो गई।
उन्होंने सोचा—"अगर यह नौकरी मिल गई, तो परिवार को बेंगलूरु में अच्छे से संभाल पाऊँगा, और खुद भी कुछ सीख पाऊँगा।" मुकाबला कठिन था। संसाधन सीमित थे।

पर इच्छाशक्ति? वह तो असीम थी। रात के सन्नाटे में लालटेन की पीली रोशनी में नागराजू किताबें पढ़ते। बिजली चली जाती तो मोबाइल की कमज़ोर टॉर्च ही उनका सहारा बनती।
कभी-कभी थकान आँखों में उतर आती, पर माँ के शब्द उन्हें फिर खड़ा कर देते—
"बेटा, तू पढ़... तेरी मेहनत एक दिन हम सब की किस्मत बदलेगी।"
गाँव के बुजुर्ग उनका हौसला बढ़ाते—**"मेहनत करने वालों के लिए भगवान भी रास्ते बना देता है।"**

<u>इंटरव्यू का दिन</u>
जब इंटरव्यू का दिन आया, नागराजू ने नए-नए कुर्ते की सिलवटें सीधी कीं। उनके मन में घबराहट भी थी, और अटूट विश्वास भी। इंटरव्यू पैनल के सामने बैठे उन्होंने सीधा, स्पष्ट और आत्मविश्वास से भरा उत्तर दिया।
उन्होंने बताया कि कैसे वे सीखने में तेज़ हैं, फील्ड के काम से परिचित हैं, और तकनीकी कामों में उनकी रुचि बंगारू की तरह चमकती है।
कुछ दिन बाद जब कॉल आया—"आप चयनित हुए हैं" कॉन्ट्रैक्चुअल एम.टी.एस. पद पर उनका चयन हो चुका था।

उन्होंने सबसे पहले अपनी माँ को फोन किया।
माँ की आवाज काँप रही थी—"बोल तन्ना, ಆಯ್ತುನಾ? (बेटा, हो गया?)"
नागराजू रोते हुए बोला—"ಹೌದು ಅಮ್ಮ... ನಾನು ಆಯ್ತು!" (हाँ माँ... मैं चुन लिया गया!)
उनकी आँखों में पहली बार इतनी चमक थी कि पास खड़े लोग भी भावुक हो उठे।
अब वे बेंगलूरु में नौकरी कर अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहारा दे सकते थे।

<u>आई.टी.सी.टी. अनुभाग में नई यात्रा — सीख, संघर्ष और सम्मान</u>
बेंगलूरु पहुँच कर नागराजू की नियुक्ति आई.टी.सी.टी. अनुभाग में हुई। यह उनके लिए एक बिल्कुल नया संसार था—सर्वर, नेटवर्किंग, मीटिंग्स, हाई-टेक उपकरण, आई.टी. असेट्स ... सब कुछ। पहले दिन उन्हें लगा कि यह सब बहुत कठिन होगा। लेकिन फिर उनकी मुलाकात हुई:

सचिन मल्लाड सर
शांत स्वभाव, तकनीकी निपुणता और धैर्य का संगम।
उन्होंने नागराजू को नेटवर्क स्ट्रक्चर, सुरक्षा प्रोटोकॉल और आई.टी. समस्याओं के मूल कारण समझना सिखाया।

जिथिन के. सर
वे हर कार्य को व्यवस्थित तरीके से करने के लिए जाने जाते हैं।
उन्होंने उन्हें रिपोर्टिंग, डोक्यूमेंटेशन, असेट ट्रैकिंग और यूज़र सपोर्ट की सूक्ष्म प्रक्रियाएँ सिखाईं।

विजय सिंह धीरावत सर
विजय सिंह धीरावत सर कहीं बैठ जाएँ, वहाँ अनुशासन, ज्ञान और प्रेरणा—तीनों स्वतः उपस्थित हो जाते हैं।"
मजबूत नेतृत्व क्षमता वाले अधिकारी। उन्होंने नागराजू को आत्मविश्वास दिया और आई.टी.सी.टी. टीम का एक महत्वपूर्ण सदस्य बनने की प्रेरणा दी|

इन तीनों अधिकारियों की सीख ने नागराजू के अंदर एक नई ऊर्जा और ज्ञान की दुनिया खोल दी।
इन तीनों अधिकारियों ने नागराजू का मार्गदर्शन ऐसे किया जैसे परिवार के बड़े करते हैं।

उन्होंने सीखा –

नेटवर्किंग कैसे सेट-अप की जाती है सिस्टम ट्रबलशूटिंग, एल.ए.एन. कनेक्शन, आई.टी. असेट्स का रिकॉर्ड और प्रबंधन,नई बैठकों में तकनीकी सेट-अप कार्यालय के डिजिटल उपकरणों की मरम्मत व रखरखाव,और सबसे महत्वपूर्ण – टीम वर्क और सेवा-भाव| कोई कंप्यूटर न चले, कोई सिस्टम लटक जाए, प्रिंटर रुक जाए, नेटवर्क धीमा हो—सबकी पहली आवाज होती:

“नागराजू सर को बुलाइए!” “जो भी ख़राब हो जाए, नागा ठीक कर देगा!” वे मुस्कुराकर तुरंत मदद करते। उनका विनम्र स्वभाव और मेहनती कार्यशैली सभी के दिल में जगह बना गई।

अब गाँव में एक प्रेरणा

आज नागराजू जब गाँव जाते हैं, तो बच्चे उनके चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं।
वे उनसे पूछते– “सर, बेंगलूरु कैसा है? आपने यह बड़ा काम कैसे किया?”
नागराजू मुस्कुराकर कहते—“बस मेहनत और विश्वास... बाकी सब रास्ते में सीख गए।”

उनकी कहानी सिर्फ एक नौकरी पाने की कहानी नहीं है,
यह उन सभी युवाओं की कहानी है जो साधारण परिस्थितियों से उठकर असाधारण सपने देखते हैं।

कहानी का संदेश

“अगर संघर्ष सच्चा और नीयत साफ हो, तो मंजिल पाँव चूमने में देर नहीं लगाती।”

"प्रसव के बाद जीवन–सत्य या भ्रम!

दलीप सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

यह कहानी माँ के गर्भ में पल रहे दो शिशुओं की है। दोनों आपस में बातचीत कर रहे होते हैं।

एक शिशु उत्सुकता से पूछता है, “क्या तुम प्रसव के बाद के जीवन में विश्वास करते हो?”

दूसरा मुस्कराते हुए जवाब देता है, “बिलकुल! ज़रूर वहाँ कुछ होगा। शायद हम यहाँ उसी जीवन की तैयारी कर रहे हैं, जो हमें आगे जीना है।”

पहला शिशु हँसते हुए कहता है, “यह सब बकवास है! प्रसव के बाद कोई जीवन नहीं होता। आखिर वहाँ कैसा जीवन होगा?”

दूसरा सोचते हुए कहता है, “मुझे ठीक-ठीक नहीं पता, लेकिन शायद वहाँ का जीवन यहाँ से बड़ा होगा। हो सकता है हम पैरों से चलें, मुँह से खाएँ, और शायद हमें ऐसी इंद्रियाँ भी मिलें, जिन्हें अभी समझ नहीं सकते।”

पहला शिशु चिढ़कर कहता है, “यह तो हास्यास्पद है! चलना असंभव है और मुँह से खाना बिल्कुल बेवकूफ़ी है। देखो, हमें तो पोषण केवल नाभिनाल से मिलता है और यह बहुत छोटा है। इसलिए प्रसव के बाद जीवन जैसी कोई बात नहीं हो सकती।”

दूसरा धीरज से कहता है, “क्या पता वहाँ का जीवन यहाँ से बिल्कुल अलग हो, और हमें इस नाल की ज़रूरत ही न पड़े।”

पहला शिशु फिर तर्क देता है, “ठीक है, अगर प्रसव के बाद जीवन है तो कोई वहाँ से लौटकर क्यों नहीं आया? प्रसव ही जीवन का अंत है। उसके बाद तो बस अंधेरा, ख़ामोशी और विस्मृति है, जो कहीं नहीं ले जाती।”

इस पर दूसरा शिशु आत्मविश्वास से कहता है, “लेकिन निश्चित ही हम माँ से मिलेंगे। वही हमारी देखभाल करेंगी।”

पहला आश्चर्य से पूछता है, “माँ? तुम सच में माँ पर विश्वास करते हो? अगर माँ है तो वह अभी कहाँ है?”

दूसरा शिशु प्रेम से उत्तर देता है, “वह हमारे चारों ओर हैं। हम उन्हीं के हैं और उन्हीं में रहते हैं। उनके बिना तो यह संसार ही न होता।”

पहला फिर कहता है, “मैं उन्हें नहीं देखता, इसलिए तर्क से कहता हूँ कि वह नहीं हैं।”

तब दूसरा मुस्कराकर कहता है, “कभी-कभी जब तुम चुप रहकर ध्यान से सुनते हो, तो उनकी उपस्थिति को महसूस कर सकते हो। ऊपर से आती उनकी प्रेमपूर्ण आवाज़ को सुन सकते हो।”

“अगर गर्भ के बाहर जीवन है, तो गर्भ के भीतर से दिखता क्यों नहीं...
वैसे ही, अगर ईश्वर है, तो दुनिया में हर सांस उसी की गवाही है।”

“अगर गर्भ के बाहर जीवन है, तो वह गर्भ के अंदर से दिखाई क्यों नहीं देता?
इसी तरह, अगर मृत्यु के बाद जीवन है, तो वह मृत्यु से पहले दिखाई क्यों नहीं देता?”

“न देख पाना, न महसूस करना—अनुपस्थिति का प्रमाण नहीं है।
कभी चुप रहकर सुनो, ईश्वर की आवाज़ भीतर से पुकारती है।”

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%

9. जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10. हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11. वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13 (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.राजभाषा संबंधी बैठकें		वर्ष में 2 बैठकें	
(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति			

15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	45%	35%	25%
			(न्यूनतम अनुभाग)	

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।

कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य शब्दांश

क्र.सं.	अँग्रेजी शब्द	हिंदी अनूदित शब्द
1	Above noted	उपर्युक्त
2	Dividend	लाभांश
3	Bulk Purchase	थोक खरीद
4	Consolidated	समेकित
5	Leave without pay	अवैतनिक छुट्टी
6	Implied Authority	अंतर्निहित प्राधिकार
7	Lawful	विधि-सम्मत
8	Modus Operandi	कार्य-प्रणाली
9	Pre-Audit	पूर्व-लेखा-परीक्षा
10	Status quo	यथापूर्व स्थिति
11	Servicing of Debts	ऋण-शोधन
12	Gratuity	उपदान
13	Due notice	उचित सूचना
14	Pass Account	लेखा पारित करना
15	Miscellaneous	विविध
16	Cited above	उपर्युक्त उल्लिखित
17	Lapse of grant	अनुदान रद्द होना
18	Scrutiny	संवीक्षा
19	Revenue Account	राजस्व-लेखा
20	Financial Irregularity	वित्तीय अनियमितता

लेखा एवं लेखापरीक्षा संबंधी वाक्यांश

क्र.सं.	अँग्रेजी	हिंदी
1	accord approval to...	कृपया ... को अनुमोदित करें
2	acknowledgement has already been sent	पावती पहले ही भेजी जा चुकी है।
3	may please furnish the requisite information	कृपया अपेक्षित सूचना दें
4	deputation of officers on short term contract	अल्पकालिक संविदा पर अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति
5	Weekly arrears statement for the week ending is submitted for perusal	समाप्त सप्ताह के बकाया काम का साप्ताहिक विवरण अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।
6	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
7	benefit of additional pension	अतिरिक्त पेंशन हितलाभ
8	duly sanctioned	विधिवत् मंजूर किया हुआ
9	Copy enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
10	leave preparatory to retirement	सेवानिवृत्ति-पूर्व छुट्टी
11	reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए/स्मरण-पत्र भेजा जाए
12	Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।
13	by registered post	रजिस्ट्री से, पंजीकृत डाक द्वारा
14	final settlement of accounts	अंतिम लेखा निपटान
15	matter is under consideration	विषय विचाराधीन है
16	for consideration	विचारार्थ
17	ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
18	paper under consideration	विचाराधीन पत्र
19	Please, attach a fair copy of the proposal.	कृपया प्रस्ताव की स्वच्छ प्रति संलग्न करें।
20	Certificate Issue of Verification of Service for pension	पेंशन से संबंधित सेवा सत्यापन का प्रमाण पत्र जारी करना।

कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने हेतु उपयोगी लिंक सूची

https://bharati.rajbhasha.gov.in/

https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/

https://narakas.rajbhasha.gov.in/saral/saral2.php

https://bhashini.gov.in/

पिता

डॉ अनुराधा जोशी
वरिष्ठ अनुवादक

पिता शांत और मजबूत पर्वत सा,
कभी न शोर करने वाला समीर है,
कोलाहल समेटा है सारा भीतर,
जैसे जलधि का अव्यक्त नीर है।

अपनी संतान के लिए चारदीवारी है,
शीश पर छत भी उसी ने संवारी है,
थकान को छुपाता है, मुस्कान की चादर में,
खुशी से उठाता सारी जिम्मेदारी है।

कितने ही झंझावातों ने उसे हिलाया होगा,
न जाने कितनी पीड़ा को उसने सहाया होगा,
वर्षा, ताप, शीत क्षीण हैं उसकी हिम्मत से,
न जाने कितनी बार टूटकर साहस जुटाया होगा।

अपने चार कपड़ों, दो जोड़ी जूतों में अपनी दुनिया समेटी है,
बच्चों की मुस्कान उसे सारी खुशियां देती है,
सफल भविष्य का विचार जगाता है रह-रहकर,
कितनी ही रातें बिना सोए, चिंता में काटी हैं।

बच्चों के दुख में सुदृढ़ संबल बन जाता है,
कठोरता में भी दया और प्रेम छिपाता है,
कभी शीतल छाया, कभी धूप है पिता,
अपने बच्चों में उसका संसार समाता है।

कौन है तू?

शिवांकू चतुर्वेदी
लेखाकार

कौन है तू?
कौन है तू? क्या है तू?
क्या तेरा वजूद है?
क्यों तुझे पाने को बेसब्र दुनिया ?
जब तू हर जगह मौजूद है|

तुझे ईश्वर कहूं, रब कहूं या कहूं खुदा?
अगर तू एक ही, तो क्यों सब में बँटा ?

ढूंढे क्यों इंसान, तुझे मंदिर मस्जिदों में?
अगर है तू, हर कण में बसा|

तू साक्ष्य है, है तरल या हवा का झोंका है?
तू साक्ष्य है, है तरल या हवा का झोंका है?
और अगर, तू सब देख रहा
तो क्यों सृष्टि में इतना धोखा है?

तू है भी या नहीं?
किसी का तू सब कुछ है
और किसी को नहीं, रत्ती भर यकीन

अगर तू श्रेष्ठ है
तो क्यों इंसान खुद को बड़ा बता रहा?
क्यों हर चीज पे सवाल उठा रहा?
और अगर, तू श्रेष्ठ नहीं
तो क्यों दुनिया को मंदिर-मस्जिद में फंसा रहा?

तू ताकतवर है, ये बताने को
क्यों कमजोरों को सता रहा?

तेरे ही नाम से इंसानियत जागी थी,
तेरे ही नाम पर कर दी गई हैवानियत बता

अगर तू सबके लिए एक है
तो क्यों तेरे इतने भेष है?
क्यों मिलता तू पहले अमीरों को
कमजोरों में क्या द्वेष है?

चलो माना कि, तू है नहीं
चलो माना कि, तू है नहीं
तो कायनात कौन चला रहा?
फलक में, कौन तारों को जला रहा?

अगर माने, कि तू है
तो क्यों असलियत छुपा रहा ?
है तेरा कोई धर्म ?
या इंसान अपने-अपने धर्म सिखा रहा

तुझे ईश्वर कहूं, रब कहूं या कहूं खुदा ?
इंसान तो धर्म के हिसाब से तेरे नाम बता रहा

कौन है तू? क्या है तू?
क्या तेरा वजूद है?
क्यों तुझे पाने को बेसब्र दुनिया?
जब तू हर जगह मौजूद है|

मैं – बच्चों से दूर एक माँ

प्रीति
कनिष्ठ अनुवादक

मैं माँ हूँ...
पर मेरी गोद अक्सर खाली रहती है।
सरकारी नौकरी की फाइलों के बीच
मैं अपने बच्चों की उँगलियों की गर्माहट ढूँढती हूँ।

जब मैंने घर छोड़ा था,
तो लोगों ने कहा–
"मज़बूत बनो, यह तुम्हारे बच्चों के भविष्य के लिए है।"
मैं मुस्कुरा दी थी,
पर किसी ने नहीं देखा
कि उस मुस्कान के पीछे
मेरा दिल कैसे टूटकर चुप हो गया था।

हर सुबह मैं समय पर दफ़्तर पहुँचती हूँ,
काम में कोई कमी नहीं रहने देती।
सब मुझे जिम्मेदार अधिकारी कहते हैं,
पर कोई यह नहीं जानता
कि मेरी हर फ़ाइल के साथ
मेरे बच्चों की तस्वीर भी रखी होती है–
ताकि मैं खुद को याद दिला सकूँ
कि यह दूरी बेकार नहीं है।

फोन पर जब बच्चे कहते हैं–
"माँ, आज तुम्हारी बहुत याद आई,"
तो मैं हँसकर जवाब देती हूँ–
"मुझे भी।"
पर कॉल कटते ही
मेरी आत्मा रो पड़ती है।
मैं उन्हें अपने आँसू नहीं दिखाती,
क्योंकि मैं नहीं चाहती
कि मेरा दर्द
उनके बचपन पर बोझ बने।

रातें...
रातें मेरी सबसे बड़ी सज़ा हैं।
जब कमरे में सन्नाटा होता है,
तब मेरी ममता जाग उठती है।
मैं तकिए को सीने से लगाकर
बच्चों की खुशबू महसूस करती हूँ,
और खुद से वादा करती हूँ—
“थोड़ा और सह लो,
यह सब उनके लिए है।”

जब बच्चे बीमार होते हैं
और मैं पास नहीं होती,
तो मुझे लगता है
कि माँ होना अधूरा है।
मैं भगवान से सौदे करती हूँ—
उनका दर्द मुझे दे दो,
बस उन्हें ठीक कर दो।

छुट्टियों में घर जाती हूँ,
तो हर पल डर के साथ जीती हूँ—
डर इस बात का
कि फिर लौटना पड़ेगा।
मैं बच्चों को ज़्यादा डाँटती नहीं,
ज़्यादा देखती हूँ...
मानो उनकी शक्लें
अपनी आँखों में सहेज रही हूँ
अगली जुदाई के लिए।

दुनिया मुझे स्वार्थी कह सकती है,
पर सच यह है—
मैंने बच्चों को नहीं छोड़ा,
मैंने खुद को छोड़ा है।
मैं माँ हूँ,
जो दूरी से भी
अपने बच्चों की ढाल बनी हुई है।

मैं माँ हूँ—
जो अपने बच्चों के लिए
जिंदा है,
उनसे दूर रहकर भी
जी रही है।

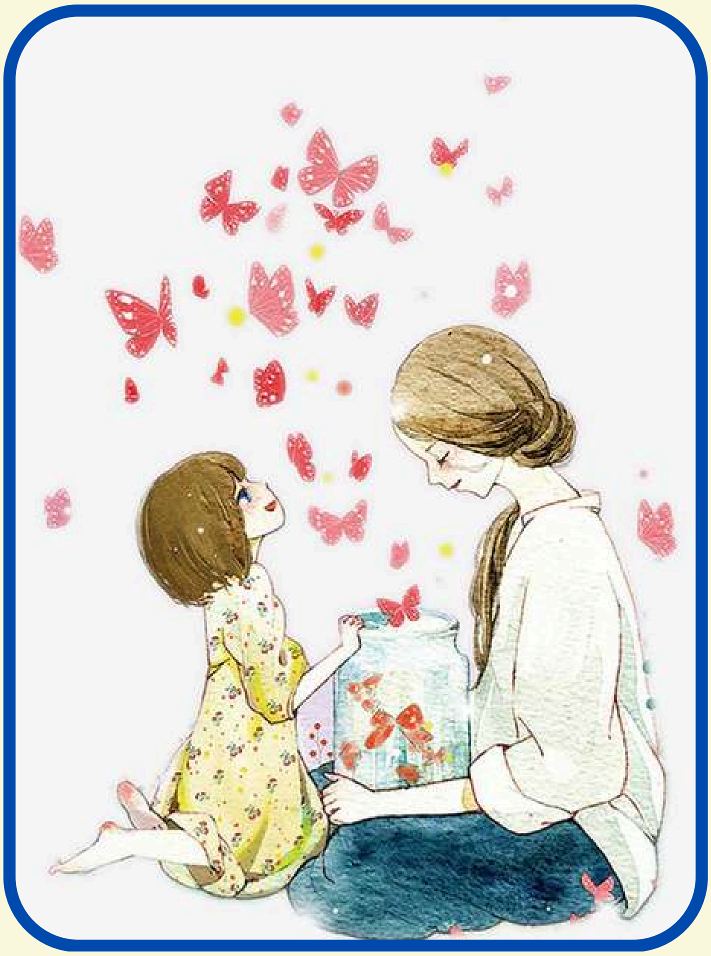

अक्तूबर 2025 से सितंबर 2026 के दौरान सेवानिवृत्त होने वाले पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति दिनांक
01.	रवींद्र कुमार एम. के.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.10.2025
02.	विक्टोरिया सेलीन टी. एन.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.10.2025
03.	जया एम. एम.	पर्यवेक्षक	31.12.2025
04.	पद्मावती के.	पर्यवेक्षक	31.12.2025
05	मंजूनाथ एस.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.01.2026
06	शिवाप्रिया बी.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	28.02.2026
07.	दिनेश एम.	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2026
08.	एंटनी विल्सन	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.03.2026
09.	इंदिरा एस. टी.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.03.2026
10.	मंजूनाथन एस.	पर्यवेक्षक	31.03.2026
11.	जयमाला बी.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.03.2026
12.	ओम प्रकाश जी.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	30.04.2026
13.	अनिल कुमार एस. आर.	पर्यवेक्षक	30.04.2026
14.	यशोदा	वरिष्ठ उप महालेखाकार	31.05.2026
15.	श्रीरंगराजन एस.	सहायक लेखाधिकारी	31.05.2026
16.	मंजूनाथप्रभु एस. एम.	पर्यवेक्षक	31.05.2026
17.	मंगेश राव आर. जे.	पर्यवेक्षक	31.05.2026
18.	पुट्टास्वामी आर.	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2026
19.	सुभद्रा एस.	सहायक लेखाधिकारी	30.06.2026
20.	मुनिराजू	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2026
21.	लोगनाथन जी.	एसएसी	30.06.2026
22.	रवींद्र एम. कुलकर्णी	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.07.2026

अक्तूबर 2025 से सितंबर 2026 के दौरान सेवानिवृत्त होने वाले पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति दिनांक
23.	आंजनेय प्रसाद वी.	सहायक लेखाधिकारी	31.07.2026
24.	राजशेखरप्पा एच. टी.	पर्यवेक्षक	31.07.2026
25.	गणेश डी. पी.	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2026
26.	होम्बले गौड़ा	एम.टी.एस	31.07.2026
27.	सुमति एन. पी.	वरिष्ठ लेखाधिकारी	31.08.2026
28.	श्रीकांत एम. एस.	सहायक लेखाधिकारी	31.08.2026
29.	सुरेश डी. एन.	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2026
30.	शलिनी एस. अग्निहोत्री	सहायक पर्यवेक्षक	30.09.2026

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2025 समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा 2025 समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण

नराकास के तत्वावधान में आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता

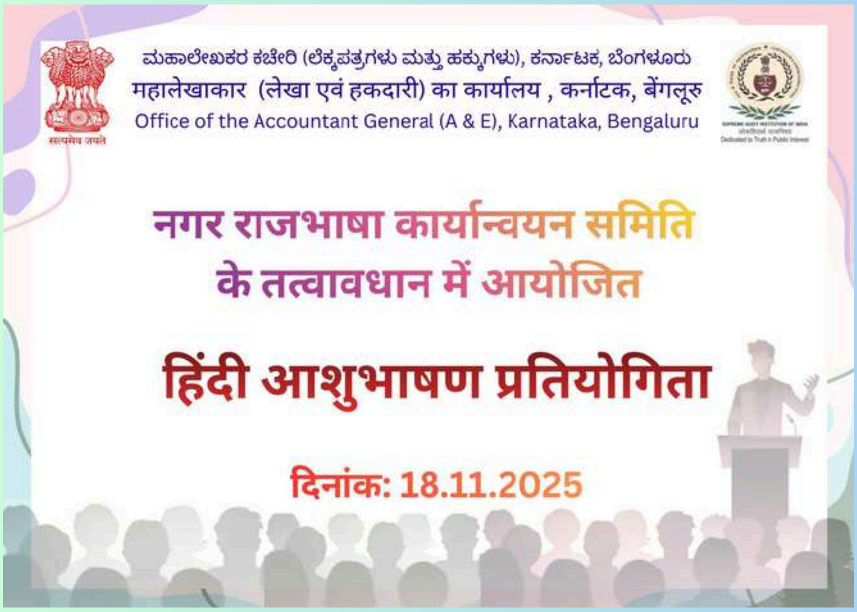

ऑडिट सप्ताह 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

ऑडिट सप्ताह 2025: समापन समारोह

अखिल भारतीय सेवा टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2025-26

कार्यालय में आयोजित हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

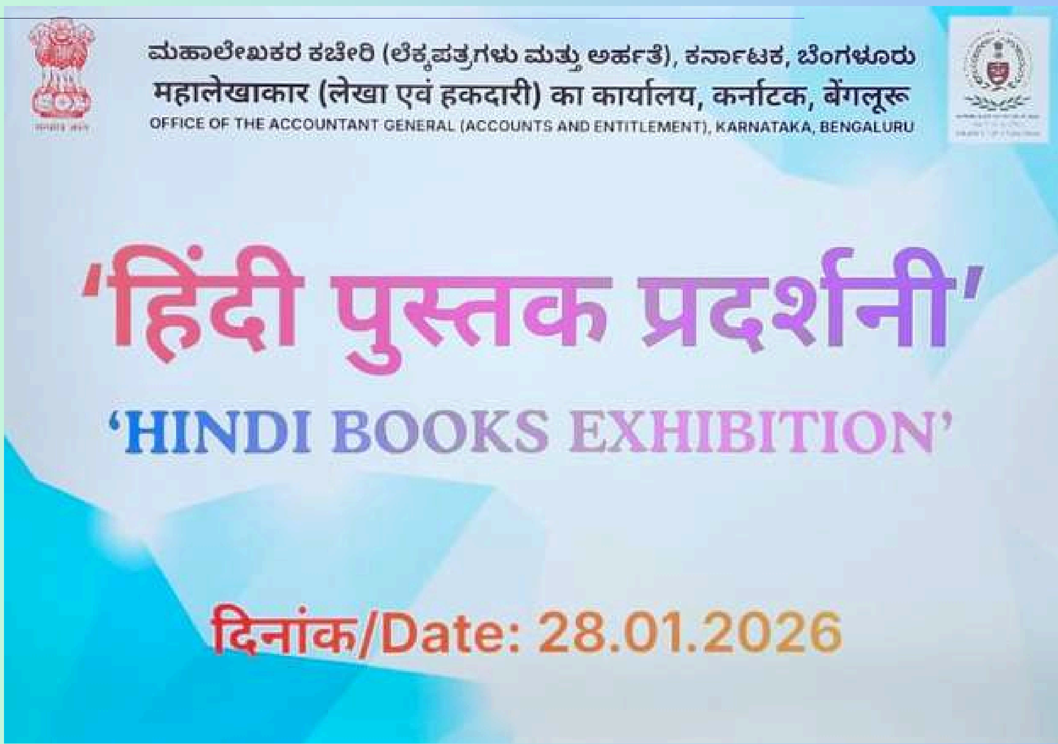

बृहत्
हिन्दी कोश
कार्यालय प्रवीणता

ईदगाह
दुनिया का सबसे अनमोल रत्न
Literature by Premchand

देखो हँस न देना

नीरव: हर कोई सूरज से ऑटोग्राफ क्यों मांगता है?
अनीश: क्योंकि सूरज एक स्टार है।

अध्यापक(विहान से): होमवर्क के लिए 50 प्रश्न हल करने को दिये थे, तुमने सिर्फ 5 प्रश्न ही क्यों हल किए?
विहान: मैडम, कल की क्लास में आपने हमें पढ़ाया था कि '0' का कोई मान नहीं होता,इसलिए मैंने 50 में से '0' हटा दिया... और 5 प्रश्नों ही हल किए।

नमन (अभिमन्यु से): तुम अपनी पेंसिल का सिर क्यों हिला रहे हो?
अभिमन्यु : क्योंकि इसमें पॉइंट है और मैं इससे सहमत हूँ।

अवि (अनि से): तुम पहाड़ों के साथ लुकाछिपी क्यों नहीं खेल सकती हो?
अनि: क्योंकि वो हमेशा पीकिंग करते रहते हैं।

प्रिया (रिया से): दुनिया का सब से बूढ़ा जानवर कौन सा है?
रिया: शायद कछुआ है।
प्रिया: नहीं, ज़ेबरा है, क्योंकि यह आज भी ब्लैक एंड व्हाइट है।

मम्मी (बेटे से): क्या तुम्हें स्कूल का पहला दिन अच्छा लगा।
बेटा: पहला दिन? आपका मतलब है कि मुझे कल भी स्कूल जाना है?

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
पार्क हाउस रोड
बेंगलूरु, कर्नाटक
560001

https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

चित्र : मैसूर पैलेस